सारांश पुस्तिका

हिंदी में राष्ट्रीय वैज्ञानिक संगोष्ठी

भारत की अर्थव्यवस्था में मात्स्यिकी का योगदान

11 जुलाई, 2019

भाकृअनुप-केन्द्रीय मात्स्यिकी प्रौद्योगिकी संस्थान

मत्स्यपुरी पी.ओ., कोचिन

काली सीपी (विलोरिता साइप्रीनोएड) का मात्स्यिकी में योगदान एक मूल्यांकन

थंकम थेरेसा पॉल, श्याम एस. सलीम, दीपा सुधीसन, एस. मनिहरन, उषा उन्निथन और रानी पालनीस्वामी

भाकृअनुप-केंद्रीय अंतर्स्थलीय मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचिन
भाकृअनुप-केंद्रीय समुद्री मात्स्यिकी अनुसंधान संस्थान, कोचिन

थंकम थेरेसा पॉल

वेंबानाड झील में मोलेस्क वर्ग के काले सीपी अर्थात ब्लैक क्लाम (विलोरिता साइप्रीनोएड) बहुत अधिक संख्या में पाये जाते हैं। इस सीपी का जलीय पारिस्थिकी को ठीक रखने, जलीय जीवों के प्रबंधन और अन्य परितंत्रों के साथ सामंजस्य बनाए रखने में प्रमुख भूमिका है। पर मानव जनित कार्यकलापों के कारण इनका उत्पादन धीरे-धीरे घटता जा रहा है। प्रस्तुत पत्र में जलीय संसाधन क्षेत्रों के प्रबंधन में काली सीपियों की भूमिका का मूल्यांकन किया गया है। जिससे संसाधनों की रक्षा के साथ इस सीपी के उत्पादन में भी वृद्धि की जा सके। इसके लिए 0.04 लाख टन सीपी उत्पादन से होने वाले लाभ का मूल्यांकन किया गया। इसमें यह देखा गया कि इन सीपियों के 10 प्रतिशत मांस का भोजन के लिए तथा इसके 90 प्रतिशत इसके कवच को उद्योगों और अन्य कार्यों में प्रयोग किया जाता है जिससे लगभग 35 करोड़ रुपये का आर्थिक लाभ हुआ है। इसके अलावा, इस सीपी को जलीय जीवों के लिए भोजन के तौर पर प्रयोग किया जाता है जिससे लगभग 600 करोड़ का लाभ हुआ है। इससे यह स्पष्ट है कि इस सीपी से प्रत्यक्ष लाभ 6 प्रतिशत आँका गया है। लेकिन इससे इस प्रजाति का अत्यधिक दोहन का खतरा बढ़ जाता है। अतः परितंत्र के लिए लाभकारी इस प्रजाति के मूल्यांकन में इसके संरक्षण संबंधी उपायों पर भी ध्यान देना आवश्यक है जिससे आवश्यकता के अनुसार इनके उत्पादन में वृद्धि की जा सके। इस प्रपत्र में झीलों में काली सीपी की भूमिका और इससे होने वाले आर्थिक लाभ के बारे में चर्चा की गयी है।